दिनांक 5 नवम्बर, 2011 को डॉ0 भीमराव अम्बेदकर विश्वविद्यालय, आगरा द्वारा आयोजित 77वें दीक्षान्त समारोह हेतु महामहिम श्री राज्यपाल का सम्बोधन

मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति श्री स्वतंत्र कुमार, कुलपति, प्रो0 डी0एन0 जौहर, कार्य परिषद एवं विद्वत परिषद के सदस्य, प्रिय विद्यार्थियो, देवियो–सज्जनो एवं मीडिया बन्धुओ,

यह मेरे लिए हार्दिक प्रसन्नता का विषय है कि डा0बी0आर0 अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा के 77वें दीक्षान्त समारोह में आप सबके बीच उपस्थित होने का सुअवसर प्राप्त हुआ। मैं आज के मुख्य अतिथि, उच्चतम न्यायालय के न्यायमूर्ति स्वतंत्र कुमार का आगरा में स्वागत करता हूँ। मुझे विश्वास है कि उनकी यहाँ

उपस्थिति मात्र से ही हमारे छात्र–छात्राओं और युवाओं में देश के कानून एवं संविधान के प्रति भावना और भी परिष्कृत होगी। मैं एक बार फिर उनका अभिनन्दन एवं स्वागत करता हूँ।

किसी भी विश्वविद्यालय के लिए दीक्षान्त समारोह एक विशिष्ट अवसर होता है, जब उसके विद्यार्थी अपने–अपने क्षेत्रों में निपुणता और विशेषज्ञता प्राप्त कर उपाधि ,पदक, पुरस्कार अर्जित करने एवं भावी जीवन के लिए दिशा–निर्देश पाने के लिए एकत्रित होते हैं । ज्ञान की गरिमामय और समृद्व विरासत उन्हें सौंपी जाती है, ताकि उस विरासत से वे समाज, राष्ट्र और विश्व के विकास में अपनी विशिष्ट और सार्थक भूमिका निभा सकें ।

आगरा आने का अवसर मुझे अनेक बार मिला। जब भी मैं यहॉ आता हूॅ –ब्रज प्रदेश में स्थित इस नगर की ऐतिहासिक गरिमा और सांस्कृतिक समृद्धि मुझे अभिभूत कर देती है। एक ओर मुगल साम्राज्य के वैभव का साक्षी यह नगर हमें आकर्षित करता है तो दूसरी ओर एक बादशाह के अमर प्रेम का प्रतीक ताजमहल प्रेम और सौन्दर्य का संगमरमरी एहसास कराता है। आपसी वैर और ईर्ष्या से आहत आज की दुनिया के लिए सम्राट अकबर द्वारा तैयार 'सुलहकुल' का मरहम भी आगरा के पास है। यह भी कैसे भूला जा सकता है कि आजादी की लड़ाई के दौरान सरदार भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, राजगुरू आदि क्रांतिकारियों ने आगरा में रहकर अपनी भावी योजनाओं के सूत्र विकसित किये।

आगरा ब्रज क्षेत्र है, जो भगवान कृष्ण और राधा की पावन लीला भूमि भी है।

आगरा नगर में स्थित आपके विश्वविद्यालय की परम्पराऍ भी अत्यन्त समृद्व और गौरवपूर्ण हैं। सन् 1927 में स्थापित यह विश्वविद्यालय अतीत में उत्तर भारत का सर्वप्रमुख उच्च शिक्षा का केन्द्र था । कालान्तर में क्षेत्र सीमित हो जाने के बावजूद वर्तमान में यहॉ चौदह संकाय तथा विभिन्न आवासीय पाठ्यक्रमों के अतिरिक्त 400 से अधिक महाविद्यालय इस विश्वविद्यालय से सम्बद्व हैं। चार लाख से अधिक विद्यार्थी यहॉ शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। अतीत में बहुत से स्वनामधन्य व्यक्तित्व इस विश्वविद्यालय से जुडे थे। पं0 मोतीलाल नेहरू, सर तेज बहादुर सप्रू, भारत के पूर्व

राष्ट्रपति, डा0शंकर दयाल शर्मा आदि महापुरुषों ने इसी विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की थी। हैदराबाद यूनिवर्सिटी के चांसलर पद्मभूषण डा0आबिद हुसैन, अमेरिका में भारत की पूर्व राजदूत श्रीमती मीराशंकर, हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार, सोम ठाकुर, श्रीमती मैत्रेयी पुष्पा आदि कितनी ही विलक्षण प्रतिभाओं को यहीं से ज्ञान का आलोक मिला।

इस विश्वविद्यालय का वर्तमान भी प्रगति के पथ पर अग्रसर है। एक राष्ट्रीय सर्वेक्षण में जो 50 विश्वविद्यालय चयनित किये गये, उनमें आपका विश्वविद्यालय भी सम्मिलित है। सत्र–नियमन के दृष्टिकोण से विश्वविद्यालय ने ठोस पहल की है। यह सब प्रसन्नता एवं सन्तोष का विषय है। आवश्यकता इस बात की है

कि आज के कठिन और चुनौतीपूर्ण दौर में आपका विश्वविद्यालय शैक्षिक गुणवत्ता की दृष्टि से उत्तरोत्तर विकास के नये आयाम स्थापित करे। और यह प्रयास रहे, जागरूकता रहे कि विश्वविद्यालय को देश एवं दुनिया के श्रेष्ठतम विश्वविद्यालयों की पंक्ति में पहुँचाना है।

स्वतंत्रता मिलने के बाद भारत को सर्वांगीण विकास की ओर ले जाना एक बडी चुनौती थी जिसे हमारे देश के कर्णधारों ने समर्पित भाव से स्वीकार किया। निस्सन्देह हम विकास की दिशा में आगे बढ़े। पूरा विश्व भारत को एक विकासशील आर्थिक शक्ति के रूप में देखता है। वैज्ञानिक ,तकनीकी और औद्योगिक दृष्टि से हम निरन्तर आगे बढ़ रहे हैं। इसका श्रेय प्रमुख रूप से उन

वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, चिकित्सकों, अर्थशास्त्रियों आदि को है, जो किसी न किसी विश्वविद्यालय अथवा संस्थान से शिक्षित–प्रशिक्षित हुए हैं। इस दृष्टि से देखें तो हमारे विश्वविद्यालय राष्ट्र के विकास का गोमुख हैं। जैसे–जैसे विकास की नयी–नयी चुनौतियाँ हमारे सामने आती जा रही हैं हमारे विश्वविद्यालयों को उनका सामना करने के लिए तैयार होना है।

विकास के बहुत से लक्ष्य प्राप्त कर लेने के बावजूद अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। हम आज वैश्विक अर्थव्यवस्था के दौर में हैं। जहाँ बाजार की भूमिका निर्णायक होती जा रही है। ऐसे में विश्वविद्यालयों में शिक्षित–प्रशिक्षित हमारी प्रतिभाएँ धनोपार्जन को ही अपना उद्देश्य मान कर उन मूल्यों, आदर्शों

और नैतिक उद्देश्यों से दूर हो रही हैं जो मनुष्य के व्यक्तित्व को पूर्णता और अर्थवत्ता प्रदान करते हैं।

हमें अपने विश्वविद्यालयों में इस प्रकार का शैक्षिक ढाँचा तैयार करना होगा जो भौतिक और सांस्कृतिक विकास के संतुलन को साध सके। हमें सूचनाओं के अम्बार से लदे संवेदना–हीन शिक्षितों की फौज तैयार नहीं करनी, बल्कि ऐसी प्रतिभाओं को गढना है, जो राष्ट्र की भौतिक प्रगति के सूत्रधार तो बनें ही साथ ही भारतीय संस्कृति के आधारभूत मूल्य भी उनकी चेतना की धमनियों में बहते हों। हमने अपने संविधान को जिन मूल्यों की नींव पर खड़ा किया है वे हैं– समता, धर्मनिरपेक्षता, मौलिक अधिकारों का संरक्षण और लोकतंत्र। हमें अपने विश्वविद्यालयों की

शिक्षा में इन मूल्यों को समाहित करना होगा। तब जो प्रतिभाएं उनकी कोख से जन्मेंगी वे देश के भौतिक और सांस्कृतिक विकास का सेतु बन सकेंगी। याद रखिये शिक्षा जीविका के लिए नहीं है जीवन के लिए है। मुझे यहाँ इस सन्दर्भ में राष्ट्रकवि दिनकर जी की ये पंक्तियाँ याद आ रही हैं–

बड़ा वह ज्ञान जिससे व्यर्थ की चिन्ता नहीं होती ।
बड़ी कविता कि जो इस भूमि को सुन्दर बनाती है।
बड़ा वह आदमी जो जिन्दगी भर काम करता है।
बड़ी वह रूह जो रोये बिना तन से निकलती है।

तैत्तरीयोपनिषद् में दीक्षान्त–बेला पर आचार्य जो उपदेश देते हैं, उनके उद्‌बोधन–सूत्र आपको जीवनपर्यन्त स्मरण रखने होंगे।

समग्र रूप से कहें तो सत्य पर अटल रहना, अपने कर्तव्य का पालन करना, भौतिक उन्नति की ओर गतिशील रहना तथा निरन्तर अध्ययन, चिन्तन और मनन और उसका प्रसार– ये आपके कर्तव्य और आदर्श होने चाहिए। आप कभी न भूलें कि श्रेष्ठ शिक्षा वह नहीं जो केवल भौतिक सुखों का साधन बने। सच्ची शिक्षा वह है जो जीवन और वातावरण में सामंजस्य स्थापित करे।

यह दीक्षान्त बेला है, शिक्षान्त बेला नहीं। शिक्षा का कभी अन्त नहीं होता। यहॉं उपाधि प्राप्त करके आपको छह मित्र बनाने होंगे – क्या, क्यों, कैसे, कौन, कहॉं, कब और कितना। यह आपकी उस जिज्ञासा के प्रस्थान–बिन्दु हैं जो आपके ज्ञान को अद्यतन बनाए रखेंगे। आपको यह कभी नहीं भूलना है कि आपने

जो शिक्षा और प्रशिक्षण प्राप्त किया है वह आपमें नेतृत्व की क्षमता का विकास करे। किसी पराधीनता के बन्धन में न बॉधे, ताकि भावी जीवन में आपको जिन चुनौतियों और समस्याओं का सामना करना है उनके लिए स्वयं को योग्य सिद्व कर सकें।

मैं इस दीक्षान्त समारोह में उपाधि, पदक तथा पुरस्कार प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को हार्दिक शुभकामनाऍ एव आशीर्वाद देता हॅू। इन विद्यार्थियों के माता–पिता तथा अभिभावकों को मेरा साधुवाद, जिनकी साधना इन विद्यार्थियों की उपलब्धियों में फलीभूत हुई है तथा विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों, अधिकारियों तथा कर्मचारियों को ऐसे गरिमापूर्ण आयोजन के लिए बधाई।

आपने मुझे इस विशिष्ट अवसर पर अपने विचार रखने का जो अवसर दिया है उसके लिए मेरा हार्दिक धन्यवाद स्वीकार करें।

नमस्कार।